



ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2019; 5(10): 358-359
www.allresearchjournal.com
Received: 15-08-2019
Accepted: 19-09-2019

Amit Raj
Research Scholar, Magadh
University, Department of Pali
Language, Bihar, India

बौद्ध धर्म में चार आर्य सत्यां का महत्व

Amit Raj

प्रस्तावना:

राजकुमार सिद्धार्थ राजवैभव को छोड़कर दुःख के कारण और दुःख निरोध के मार्ग की खोज में चल पड़े। वे प्रथम तापस आलार कालाम के पास गये। आलार कालाम ने समाधि के सात ध्यानों को सिखाया किन्तु सिद्धार्थ को आलार कालाम की शिक्षा से सन्तोष नहीं हुआ और विशेष जानने के लिए सिद्धार्थ उद्धेक रामपुत्र नामक तापस के पास गये। उन्होंने आठवाँ ध्यान सिखाया। किन्तु इनके भी दर्शन से सिद्धार्थ को संतोष न हुआ। तब वे उरुवेला आये और उन्होंने निरंजना नदी के तट पर आवास किया। सिद्धार्थ कृत संकल्प ही पेड़ के नीचे आसन लगाकर बैठ गये। तब उन्होंने प्रतिज्ञा की जब तक मैं कृत कृत्य नहीं हो जाता तब तक इसी आसन पर बैठा रहूँगा। रात्रि के प्रथम ग्राम में उनको पूर्व जन्मों का ज्ञान हुआ दूसरे ग्राम में दिव्य चक्षु विशुद्ध हुआ, अन्तिम ग्राम में द्वादश प्रतीत्य समुत्पाद का साक्षात्कार हुआ तभी से सिद्धार्थ गौतम सम्यक् सम्बुद्ध कहलाने लगे। सर्वज्ञता का साक्षात्कार कर भगवान ने सर्वप्रथम थे प्रीतिवचन उदान कहे –

अनेकजातिसंसारं, सन्धविस्सं अनिब्बिसं।
गहकारं गवेन्सन्तो, दुक्खा जाति पुनप्पुन।।
गहकाकर दिट्ठोसी, पुनः गेह न कहासिक।
सब्बा ते फासुका, भग्गा, गहकूट विखखितं।
विसंखारगंत चित्तं तण्डहान खमज्झगा।
(धम्मपद गा० 153-154)

अनेक जन्मों तक बिना रूके संसार में दौड़ता रहा। इस कायारूपी घर बनाने वाले की खोज न करते हुए पुनः पुनः दुःखयम जन्त लेता रहा। हे गृहकाकरण (हे घर बनाने वाले) अब तुझि देख दिया है। अब तू पुनः घर नहीं बना सकेगा। तेरी सारी कड़ियाँ टूट गई, गृह शिक्षर ढह गया, गर गया। चित्त संस्कारों से विहीन हा गया। तृष्णा का समूल नाश हो गया।

सात सप्ताह तक भगवान विविध स्थानों पर बैठकर विमुक्ति सुख, निर्वाण का आनन्द लेते रहे, इसके बाद सर्वप्रथम उनका विचार 'आलार कालाम' और 'उद्धेकरामपुत्र' को धर्मोपदेश (देशना) देने का हुआ। किन्तु समाधि द्वारा यह जान गये कि वे अब जीवित नहीं हैं। उन्होंने और पाँच भिक्षुओं को धर्म का उपदेश करने का निश्चय किया, जो उनका साथ छोड़कर ऋषिपतन मृगदाब (सारनाथ) काशी के पास चले गये थे। वहाँ जाकर भगवान बुद्ध ने पचवर्गीय भिक्षुओं को आषाढ पूर्णिमा के दिन धम्मचक्कपवनसुत्त का उपदेश दिया, जिसके अन्तर्गत चार आर्यसत्य का वर्णन मिलता है।

आर्य का अर्थ उत्तम शुद्ध पवित्र है। दुःख है इस सच्चाई को यथाभूत जानना है, दर्शन करना है, उससे भागना नहीं है। तब यह सच्चाई आर्य-सच्चाई बन जाती है और यह दर्शन करने वाला आर्य बन जात है। इसके भगवान बुद्ध ने दो अतियों से दूर हरने को बताया है कामासुखिलिकानुयोग-मुखी द्वारा करणीय तथा अनार्यजनो द्वारा सेविक कामवासनाओं में अत्यधि लिप्त रहना। आत्कलमथानुयोग – जो दुःखमय अपन लिये कष्ट कर, मूर्ख द्वारा ही करणीय, अनार्यजन सेवित तथा अत्यधिक अनर्थकारी तपसयाओं में लगे रहना इन्हीं दो अतियों से दूर रहकर निर्वाण की प्राप्ति होती है जिसे धम्मपद में –

व नग्गचरिया न जटा न पंका, मानासका थण्डिलसायिका वा।
रजोवज्जल्लवक्कुटिप्पधानं, सोधोनिं मच्चं अवतिष्णकंख।।
(धम्म० गा० 14)

Corresponding Author:
Amit Raj
Research Scholar, Magadh
University, Department of Pali
Language, Bihar, India

अर्थात् जिस पुरुष के संदेह समाप्त नहीं हुए हैं, उसकी शुद्धि न नंगे रहने से न जटा रखने से, न कीचड़ लपेटने से, न उपवास करने से, न कड़ी भूमि पर सोने से, न धूल लपेटने से और उकड़ू बैठने से ही होती है।

चार आर्यसत्य को बौद्ध धर्म का मूल सिद्धान्त कहा जाता है, जिसके चार स्तम्भ हैं दुःख पहला आर्यसत्य है जो चेतना जीवन की सभी स्थितियाँ और सभी अवस्थाएँ में पीड़ा और कष्टों अर्थात् दुःख से समन्वित है। जन्म लेना दुःख है, बुढ़ापा है, रोग दुःख है, मरु दुःख है, इच्छाओं की पूर्ति न होना दुःख है, अप्रिय का संयोग दुःख है और प्रिय का वियोग दुःख है जो प्रत्यक्ष है जैसे चोट, व्याधि, बीमारी, प्रियजन की मरु भूख पस, निवस्त्रा निराश्रितता आदि के कारण तीव्र पीड़ा से उत्पन्न दुःख। दूसरा दुःख है 'विपरिणाम' यानि बदलने वाली स्थिति के कारण उत्पन्न दुःख। स्थिति सुखद रहती हुई समयान्तर से बदल जाती है, प्रतिकूल, दुःखद स्थिति में बदल जाती है। जैसे भाईयो में संघर्ष, पति पत्नी में कलह, मित्र-मित्र में अनबन, धन की निर्धनता, पदभ्रष्टता या अधिकार या सत्ता की समाप्ति। तीसरा दुःख है संस्कार दुःख। संस्कार दुःख यानि चित्त की चेतना से संस्कारजन्म कर्मों का फलो से उत्पन्न दुःख। इसमें प्रायः सारे दुःख समाविष्ट हैं।

दुःख समुदय आर्य सत्य यह दूसरा आर्यसत्य इसमें बताया गया है कि दुःख का कारण तृष्णा है, अपने लिए ही जीवन जीने की तीव्र आंकषापने चारों ओर की परस्थिति से उत्पन्न वेदनाएँ एक पृथक् (अलग) अपने आपको भ्रम पैदा करती है। यह भ्रामक मन अपनी क्रियाशीलता का प्रदर्शन अपनी स्वार्थपूर्वक इच्छाओं की पूर्ति के रूप में प्रकट करता है जो कि आदमी को कष्टों और दुःख के मायाजाल में फँसा लेती है। जीवन के तथाकथित भाग के सुमधुर ध्वनियों है जो आदमी को दुःख की ओर आकर्षित करती है। तृष्णा तीनप्रकार की होती है – काम तृष्णा, भव तृष्णा और विभव तृष्णा। काम तृष्णा – भाग समामग्री के प्रति भाग दौड़, भौतिक सुखों की कामना, इन्द्रिय सुखों के प्रति आसक्ति यह काम तृष्णा है। भव तृष्णा – जीवित रहने की तीव्र अभिलाषा। विभव तृष्णा– मरने के तद स्वर्ग नरक कोई नहीं है। यह एक मात्रा लोक है और यहाँ के सांसारिक सुखों को भोगने मात्रा की तृष्णा विभव तृष्णा है।

तीसरा आर्यसत्य दुःख निरोध के नाम से जाना जाता है इसमें बताया गया है कि यदि दुःख है तो उसका कारण तृष्णा है और उस तृष्णा का सर्वनाश होता है तब दुःख का अनिवार्यतः होता है जितनी तृष्णा है इसकी जननी इच्छा है और जब तक इसकी पूर्ति भी हो जाती है तब इसकी पूर्ति स्थायी नहीं होती क्योंकि यह पूर्ति नई इच्छाओं को जन्म देती है और उसी से नई-नई चिन्ताये उत्पन्न होती है। मनुष्य का समस्त सार ही कभी न बुझने वाली हजारों की प्यास मात्रा है। बिना इस प्यास से मुक्त हुए वहदूसरे किसी उपाय से दुःख से मुक्ति लाभ कर सकता है। चौथा आर्यसत्य दुःख निरोधगामिनी पटिपदा आर्य सत्य को कहा गया है। इसमें तथागत ने अष्टांगिक मार्ग को बताया है तथागत ने कहा है कि स्वाथपूर्ण इच्छाओं से मुक्त हो सकता है और दुःख से पूर्णतः मुक्त हो सकता है। धम्म की गहराई में उतरने वाला सम्यक मार्ग पर चलेगा तभी उसका निर्वाण सुनिश्चित होगा। वह अष्टांगिक मार्ग कुछ इस प्रकार है – सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प सम्पयक वाक सम्यक मन्ति, सम्यक जीव सम्यक व्यायाम, सम्यक् सति एवं सम्यक् समाधि इसमें प्रथम दो समयक् दृष्टि और सम्यक संकल्प प्रज्ञा के अन्तर्गत आते हैं, सम्यक वाक्, सम्यक् कन्ति और सम्यक् अजीव शील के अन्तर्गत आते हैं तथा सम्यक् व्यायाम सम्यक् समृति समाधि जो समाधि के अन्तर्गत आते हैं।

तथागत बुद्ध की देशनाओं में मिलता है अगर आपको दुःख से निवरण चाहिए तो आपको अष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करना पड़ेगा। बौद्ध धर्म में आर्य अष्टांगिक मार्ग को बौद्ध धर्म के शील का प्रतिरूप है और शील बौद्ध धर्म ने धम्म की आधारशिला है।

आर्य अष्टांगिक मार्ग बहुत व्यापक और विस्तृत है और आनन्द की प्राप्ति का मार्ग है, उसकामार्ग सम्यक दृष्टि की मशाल से आलोकित होनी चाहिए, सम्यक् संकल्प उसका मार्गदर्शक होना चाहिए, सम्यक वाणी आर्य अष्टांगिक मार्ग पर उसकी विश्रामस्थली होनी चाहिए, सम्यक कर्मानत सकी सीधी गति होनी चाहिए। सम्यक व्यायाम आर्य अष्टांगिक मार्ग पर गन करते समय उसका जलपान होना चाहिए, सम्यक व्यायाम आर्य, अष्टांगिक मार्ग पर उड़ने वाले उसके कदम होना चाहिए, सम्यक स्मृति सकी सांस होनी चाहिए और सम्यक् समाधि उसका शयनासन होना वाले उसके कदम होने चाहिए। सम्यक स्मृति उसकी सांस होनी चाहिए और सम्यक समाधि उसका शनासन होना चाहिए।

एतं खो सरणं खेमं, एतं सरणमुत्तम।

एत साणामगम्म, सब्बुदक्खा पमुच्चति।

(धम्मपद पृ० 39)

अर्थात् जो बुद्ध, धर्म और संघ की शरण गया है जो आर्य सत्यों – (दुःख, दुःख की उत्पत्ति, दुःख से मुक्ति और मुक्तिगामी आर्य अष्टांगिक मार्ग) को सम्यक प्रज्ञा से देखता है यही मंगलदायक शरण है, यही शरण है। इसी शरण को प्राप्त कर व्यक्ति सभी दुःखों से मुक्त होता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शास्त्री द्वारिकादास, महावग्गपलि, वाराणसी, बौद्ध भारती, 2013
2. नरसु लक्ष्मी, चार महान आर्यसत्य और अष्टांगिक मार्ग, नई दिल्ली, सम्यक प्रकाशन 2010
3. ताराराम, धम्मपद एक परिचय, नई दिल्ली, सम्यक प्रकाशन, 2008
4. राठी, लक्ष्मीनारायण दुःख मुक्ति की साधना, महाराष्ट्र, श्री जगन्नाथ राठी चैरिटी ट्रस्ट 1984